(1) Lectur No:- 34. online class, Date- 6/5/2020, Time- 10:00 to 10:50 A.M

Topic,

(1) Theory of Pramanas.

Dr. Surita Kumari
Department of philosophy.
B.A part -I Paper-I (H.)
A.N.D. College shahpur patory,
Samastipur

Ans:- 'प्रत्यक्ष' शब्द का प्रयोग प्रमाण और प्रमा दोनों ही अर्थ में किया जाता है। ऐसे में व्यापक प्रयोग का एकमात्र कारण यह है कि यह यथार्थ ज्ञान का एक साधन भी है, और साध्य भी। प्रत्यक्ष का प्रमाणों में प्रथम स्थान है।

क्योंकि अन्य सभी प्रमाणों का यह मूल आधार है। जिसके आधार होने की बात को बड़े ही स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया गया है :-) सर्वप्रमाणां प्रत्यक्ष पूर्ववात्वात्'। महान भारतीय चिंतक शंकराचार्य ने भी स्वीकार किया है कि प्रत्यक्ष के संभव रहने पर अनुमानादि की कोई प्रवृत्ति नहीं रह जाती।
अतः प्रत्यक्ष एक महत्वपूर्ण प्रमाण है।

P.T.O.

प्रत्यक्ष शब्द प्रति + अक्ष दो शब्दो के मेल से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ क्रमश :-> सामने और आँख होता है। किन्तु प्रत्यक्ष शब्द का अर्थ है-)

आँख के समक्ष न मानकर इसका अर्थ -विस्तार कर दिया गया है। तथा इसमें सामान्य ज्ञानेन्द्रियों और वस्तु के निष्कर्ष से उत्पन्न ज्ञान माना जाता है। इसी अर्थ को ध्यान में रखकर न्याय दर्शन के संस्थापक गौतम ने न्याय सूत्र में इसकी परिभाषा दी है।

'इन्द्रियार्थ सन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानं प्रत्यक्षम्'।

इसी परिभाषा से स्पष्ट है कि प्रत्यक्ष ज्ञान की उत्पत्ति के लिए इन्द्रिया एवं अर्थ दोनों का रहना आवश्यक है। इतना ही नहीं दोनों का संबंध अथवा सन्निकर्ष भी आवश्यक है।

यदि हमारी आँख के समक्ष पुस्तक उपस्थित होती है। तथा

P.T.O.

हमारी आँख उसे ग्रहण करती है तथा इस सन्निकर्ष के फलस्वरूप पुस्तक का प्रत्यक्ष हमें होता है।

प्रत्यक्ष को प्रमाण इसलिए कहा गया है कि इसमें अनुभव असंदिग्ध-त्व तथा यथार्थत्व तीनों ही लक्षण ज्ञान के पाये जाते हैं।
प्रत्यक्ष के लिए परिभाषा सर्वसाधारण के लिए मान्य है। नव्य न्याय के प्रणेता गंगेश उपाध्याय इसकी परिभाषा में तीन प्रधान दोष बतलाते हैं।
:→ (i) अतिव्याप्ति दोष
(ii) व्याप्ति दोष तथा
(iii) चक्रक दोष। (i) इनके अनुसार प्रत्यक्ष के अतिरिक्त अनुमान आदि में भी तो मन का ऐसा वस्तु में संबंध प्रत्यक्ष प्रमाण में नहीं बल्कि अन्य सभी प्रमाणों में भी पाये जाते हैं।
(ii) दूसरी दृष्टि से इस परिभाषा में अतिव्याप्ति दोष भी आ जाती है क्योंकि बिना इन्द्रिय संपर्क के भी प्रत्यक्ष ज्ञान पाया जाता है। etc.

E N D